स्नातक -तृतीय (प्रतिष्ठा) ,पंचम पत्र

राष्ट्रीय पुनर्जागरण और भारतेन्दु

भारतेंदु हरिश्चंद्र राष्ट्रीय पुनर्जागरण के मसीहा थे । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय स्वाभिमान को पुनर्जागृत करने तथा भारतीय समाज को अंधकार से निकालकर उनमें नवीन चेतना का संचार किया । 19वीं शताब्दी के बौद्धिक पृष्ठभूमि निर्माताओं में भारतेंदु हरिश्चंद्र अग्रगण्य थे । यही वजह है कि इन्हें हम राष्ट्रवादी साहित्य के अग्रदूत के रूप में जानते हैं ।

भारतीय पुनर्जागरण हमारी राष्ट्रीय चेतना का नवीन उन्मेष था । इसका मुख्य उद्देश्य इहलौकिक अस्तित्व को सुरक्षा प्रदान करने हेतु धर्म और सार्थक परंपरा को अनुकूलित करना था । उन दिनों पुनर्जागरण की दो धाराएं स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती हैं - पहली धारा पाश्चात्य ज्ञान के सहारे भारतीय धर्म और समाज में व्याप्त बुराइयों को मिटाने का प्रयत्न करती थी तो वहीं दूसरी धारा भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का निरंतर बढ़ते आक्रमण के विरुद्ध भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहती थी । भारतेंदु ने इन दोनों विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया । 'भारत दुर्दशा' नामक अपनी रचना में वे भारत के अतीत का गौरव गान करते हुए कहते हैं-

"भारत के भुजबल जग रक्षित ।

भारत विद्यालहि जग सिच्छित ।।

भारत तेज जगत विस्तारा।

भारत भी कंपत संसारा ।।

भारतेंदु को कुछेक आलोचकों ने कट्टर राजभक्त तथा मुस्लिम विरोधी बताया है । यह सही है उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि एक राजभक्त की ही थी । आरंभ में उन्हें लगता था कि ब्रिटिश क्राउन के अधीन आने के बाद भारतवर्ष की काफी उन्नति होगी लेकिन धीरे-धीरे उनका विश्वास क्षीण होने लगा और अंग्रेजों की कुटिलता को वे समझ गए। तदुपरांत राज भक्ति की स्याही से उन्होंने देशभक्ति का साहित्य रचा । 'मानसोपायन' के उनके विचार उल्लेखनीय हैं - "कभी हिंदुओं की दशा पर करुणा उत्पन्न होती है , कभी स्नेह कहता है हां यही अवसर है खूब जी खोलकर जो कुछ हृदय में बहुत काल से भाव और उद्गार संचित हैं उनका प्रकाश करो। 1878 ई. के अंग्रेज अफगान युद्ध के निहितार्थ को भारतेंदु ने व्यंग्यात्मक शैली में अभिव्यक्त किया है-

"स्ट्रेची -डिजरैली लिटन चितय नीति के जाल ।

फँसि भारत जर्जर भयो काबुल युद्ध अकाल ।।

सुजस मिलै अंग्रेज को होय रूस की रोक ।

बढ़ै ब्रिटिश वाणिज्य पै हमको केवल सोक ।।"

उन्होंने स्त्रियों के लिए 'बालाबोधिनी' नामक पत्रिका निकाला । वे वास्तव में हमारे समाज की बुराइयों को दूर करना

चाहते थे ताकि अंग्रेज भारतीयों को दिन-हीन नहीं समझे और देशवासी मतभेदों को भूलकर भारत माता के सपूत बन सकें । भीतर भीतर सब रस चूसने वाले अंग्रेजों के शोषण के फलस्वरुप जनता की स्थिति इतनी दयनीय हो चुकी थी कि भारतेंदु इस दुर्दशा पर अपने भारत भाइयों से मिलकर मातम मनाने तक का आह्वान कर डालते हैं-

"रोबहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई ।

हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।"

भारतीय धर्मों में घुसपैठ की बुराइयों से भारतेंदु काफी चिंतित थे क्योंकि भारतीय का अपमान और भारतवर्ष में ईसाई मत का प्रसार धड़ल्ले से हो रहा था। हिंदू धर्म में पशुबलि, बहुदेववाद , सती प्रथा, देवदासी प्रथा, फिजूल कर्मकांड और पाखंड आदि का प्रचार अत्यधिक बढ़ गया था । संप्रदायिकता में वृद्धि हो रही थी । अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति कार्यशील थी। ऐसे में भारतेंदु आह्वान करते हैं-

"फूट बैर को दूरि करि बाँधि कमर मजबूत ।

भारत माता के बनो भ्रातो पूत सपूत ।।"

भारतेंदु आधुनिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने के लिए निज भाषा को प्रचलित और इतना समृद्ध बनाना चाहते थे कि हिंदी ही नहीं भारतवर्ष की अन्य भाषाएं भी ज्ञान विज्ञान का माध्यम बनें । उन्होंने निज भाषा की चिंता निम्नलिखित शब्दों में की है-

"निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल ।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिए को सूल ।।

अंग्रेजी पढिकै जदपि सबगुन होत प्रबीन ।

पै निजभाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन ।।"

भारतीयों में जो हीन भावना घर कर गई थी वो निजभाषा में दर्शन, विज्ञान आदि की किताबें लिखे जाने से ही दूर होगी । इस प्रकार भारतेंदु साहित्य में पुनर्जागरण के तत्व जितने साहित्य रचनात्मक धरातल पर प्रस्तुत हुए हैं उतने ही क्रियात्मक स्तर पर भी रूप आए हुए हैं।

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वे इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें । विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य, लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं ,जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्री नारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय